'कन्यादान'

'कन्यादान'

माड्यूल 1/1

प्रस्तुतकर्ता-
रविकुमार जैन
प्र.स्ना.अध्यापक (चयनमान)
हिंदी/संस्कृत

प.ऊ.के.वि.इंदौर

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो

भावार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि अपनी लड़की का कन्यादान अर्थात शादी के बाद विदा करते वक्त किसी माता का दुःख बड़ा ही स्वाभाविक होता है। हर माता को यह लगता है कि उसके जीवन की आख़िरी जमा पूँजी भी उससे दूर चली जा रही है। बड़े ही लाड-दुलार से उन्होंने अपनी बेटी को पाल पोसकर बड़ा किया था। आखिर अपनी बेटी के साथ ही तो वे अपने जीवन का सुख-दुःख बांटती थी। वही तो उनके जीवन की साथी थी। परन्तु अब यह साथी भी उनसे दूर चली जा रही है।

लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

भावार्थ :- आगे कवि ऋतुराज कहते हैं कि लड़की बड़ी तो हो गई थी, लेकिन पूरी तरह से सयानी नहीं हुई थी, अर्थात दुनियादारी की समझ अभी तक उसमें नहीं आयी थी। उसने अभी तक अपने घर के बाहर की दुनिया नहीं देखी थी। उसे जीवन की जटिलता का सामना नहीं करना पड़ा था। उसका जीवन अभी तक बड़ी सरलता से बीत रहा था। यही कारण है कि उसे ख़ुशियाँ मनाना तो आता था, लेकिन परेशानियों का सामना कैसे किया जाए, ये अभी तक नहीं पता था। अपने घर के बाहर की दुनिया उसके लिए एक धुंधली तस्वीर की तरह थी। जिसे वो कभी ठीक से देख नहीं पाई थी। जब तक कोई व्यक्ति घर के बाहर कदम न रखे, बाहर की दुनिया में वक्त न गुजारे, तब तक उसका संपूर्ण रूप से विकास नहीं हो सकता। इसलिए अभी वह भोली बच्ची केवल सुखों की कल्पना में जी रही थी।

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

भावार्थ :- अपनी इन पंक्तियों में कवि ने उस माँ का वर्णन किया है, जो विदाई के वक्त अपने बेटी को नसीहत दे रही है कि उसे ससुराल में किस तरह रहना है और किस तरह नहीं। सबसे पहले माँ अपनी बेटी को बोलती है कि अपनी सुंदरता पर कभी मत इतराना क्योंकि सांसारिक जीवन को सही तरह से चलाने के लिए, सुंदरता से ज्यादा हमारे गुण काम आते हैं। फिर माँ अपनी बेटी को कहती है कि आग रोटियाँ पकाने के लिए होती है, न कि जलने के लिए अर्थात वह अपने बेटी को यह कहना चाह रही है कि अपनी जिम्मेदारियों को अवश्य निभाना, परन्तु किसी अत्याचार को मत सहना। उसके बाद माँ कहती है कि वस्त्र-आभूषण के मोह में कभी ना पड़ना, यह केवल एक बंधन है, जिसमें कभी भी नहीं बंधना चाहिए। इसके चक्कर में बसा-बसाया संसार भी उजड़ सकता है।

माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

भावार्थ :- इन पंक्तियों में माँ अपनी बेटी को कह रही है कि अपने आप को किसी के सामने एक दुर्बल कन्या की तरह प्रस्तुत मत करना और न ही अपनी निर्बलता किसी के सामने आने देना। इस संसार में लोग निर्बल के ऊपर ही अत्याचार करते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि अपने भीतर नारी के सभी गुण बनाए रखना, लेकिन दूसरों के सामने खुद को कभी निर्बल और असहाय मत दिखाना।